श्री विष्णु सहस्रनाम

भगवान विष्णु के सहस्रनाम की व्याख्या

भाग - 1

व्याख्याकार

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त आश्रम प्रकाशन

www.vmission.org.in

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १ –

ॐ विश्वस्मै नमः

विश्व की तरह व्यक्त प्रभु को नमन।

My pranam to the one who has manifested as this entire universe

सर्व प्रथम भगवान विष्णु के निराकार, ईश्वर रूप को 'विश्व' नाम से नमन किया जा रहा है। विश्व का अर्थ होता है – विशति इति विश्वं, यथा मुण्डक उपनिषदि 'पुरुष एवेदं विश्वम्' इति अर्थात् जो सब में सब होकर प्रविष्ट है। जैसे मुण्डक उपनिषद् में बताया कि यह पुरुष ही विश्वरूप है। वे ही सबकी आत्मा होकर बिना किसी भेद-भाव के सबको अस्तित्व और जीवन्तता प्रदान करते हैं। समस्त जड़-चेतन की तरह से भगवान विष्णु ही विश्व की तरह से विद्यमान हैं, उन परमात्मा को सादर प्रणाम।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २ –

ॐ विष्णवे नमः

सर्वव्यापी प्रभु को नमस्कार।

I salute the one who is All Pervasive.

वेवेष्टि व्याप्नोति इति विष्णुः अर्थात् जो व्याप्त हो वह विष्णु हैं। ईश्वर की सर्वव्यापकता को जब बताना हो तब उन्हें विष्णु नाम से सम्बोधित किया जाता है। यहां जगत में जो कुछ भी जड़–चेतन, अच्छा या बुरा आदि विद्यमान है उन सबके कण–कण में परमात्मा व्याप्त हैं। सब कुछ मूल रूप से दिव्य और सुन्दर है। कुछ भी राग और द्वेष करने योग्य नहीं है।

उन विष्णु रूपी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३ –

ॐ वषट्काराय नमः

यज्ञस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Yagna-Swaroop

वषट् वह मंत्र होते हैं जो देवताओं को आहूति देने हेतु प्रयोग होते हैं। इन मंत्रों के द्वारा देवता लोग प्रसन्न होते हैं और इष्ट फल प्रदान करते हैं। जहां ये मंत्र प्रयोग होते है, उन यज्ञ को वषट्कार कहा जाता है। इस प्रकार यज्ञ रूपी अत्यन्त पवित्र एवं मंगलकारी सेवा–स्वरूप साधन रूप से भगवान विष्णु ही प्रकट हैं। उन यज्ञस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

प्रमाण : यज्ञो वै विष्णुः। (तैत्तिरीय संहिता)

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४ –

ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः

भूत, भविष्य और वर्तमान के स्वामी को नमस्कार।

I salute the one who is Lord of

Past, Present & Future.

भूतं च भव्यं च भवत् च भूतभव्यभवन्ति तेषां प्रभुः अर्थात् भूत, भविष्य और वर्तमान के स्वामी। भगवान विष्णु मूल रूप से तीनों कालों के स्वामी हैं। वे स्वतः कालातीत रहते हुए, अर्थात काल से अप्रभावित रहते हुए, तीनों कालों के ज्ञाता एवं नियन्ता हैं। ऐसे त्रिकाल के स्वामी, एवं स्वयं जन्म–मरण आदि विकारों से मुक्त भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५ –

ॐ भूतकृते नमः

जगत् सृष्टा परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Creator of the whole Universe.

रजोगुणं समाश्रित्य विरिंचिरूपेण भूतानि करोति इति भूतकृत् अर्थात् रजोगुण का आश्रय लेकर यह ब्रह्मारूप से भूतों की रचना करते हैं, इसलिए भूतकृत कहलाते हैं। भूत का आशय यहां पर पंचमहाभूतों से है, जिनसे ही समस्त जगत का निर्माण हुआ है। परमात्मा अपनी मायाशक्ति को धारण करके रजोगुण की प्रधानता से पंचमहाभूतों की सृष्टि करते हैं। सृष्टा रूप से वे ही ब्रह्मा अथवा विरंचि कहलाते हैं।

जगत के मूल उपादान रूप पंचमहाभूतों के सृष्टा परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६ –

ॐ भूतभृते नमः

जगत् पालक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Sustainer of the whole Universe.

सत्त्वगुणमधिष्ठाय भूतानि बिभर्ति पालयति धारयति पोषयति इति वा भूतभृत् अर्थात् सत्वगुण के आश्रय से भूतों का पालन पोषण करने के द्वारा धारण करते हैं इसलिए वे भूतभृत हैं। परमात्मा अपनी मायाशक्ति के द्वारा निर्मित समस्त जगत का पालन–पोषण करते हैं। अगर हमें भूख दी है, तो साथ साथ अन्न की व्यवस्था की है, पाचन–तन्त्र दिया है। इसी कारण से हम सब टिके हुए हैं। अनेकों प्राकृतिक व्यवस्थाओं से जगत टिका हुआ है। उन जगत के पालनकर्ता भगवान को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७ –

ॐ भावाय नमः

उत्पत्ति रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the manifest

भवन्ति इति भावाः, अर्थात् जो उत्पन्न होता है। उत्पत्ति एक दिव्य घटना है, एक चमत्कार है। हम इस प्रक्रिया को सतत देखते रहते हैं इसलिए इसके बारे में सम्भवतः कम सोचते हैं, वस्तुतः किसी के जन्म का सामर्थ्य अद्भुत ईश्वरीय घटना होती है। वे भगवान सबके उपादान हैं, आत्मा हैं, और साथ–साथ उत्पत्ति की अद्भुत घटना के रचयिता भी हैं।

उन भाव रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८ –

ॐ भूतात्मने नमः

सभी भूतों के आत्मतत्त्व को नमस्कार।

I salute the one who is the Self of all.

भूतानां आत्मा अन्तर्यामी इति भूतात्मा अर्थात् जो भूतों की आत्मा अर्थात् अन्तर्यामी होने से भूतात्मा है। पंचमहाभूतों से बने हुए समस्त जगत की आत्मा की तरह से भगवान् विष्णु ही स्थित हैं। उनकी वजह से ही पंचमहाभूत से बना हुआ जगत अस्तित्व को प्राप्त है, तथा जड़ शरीर भी जीवन्त हो जाता है। वे सब की आत्मा, अन्तर्यामी तथा सब के सारस्वरूप भगवान विष्णु हैं।

उन सब के सारभूत तत्त्व परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९ –

ॐ भूतभावनाय नमः

भूतों की उत्पत्ति तथा वृद्धि कर्ता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who creates and multiplies the creatures.

भूतभावन अर्थात् भूतानि भावयति, जनयति, वर्धति वा; अर्थात् जो समस्त भूतों को उत्पन्न करता है तथा उसकी वृद्धि करता है। समस्त जगत की उत्पत्ति करके उसकी वृद्धि करने वाले भी परमात्मा भगवान विष्णु हैं।

उन भूतभावन रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १० –

ॐ पूतात्मने नमः

पवित्रस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Extremely Pure.

पूत आत्मा यस्य सः पूतात्मा अर्थात् जो पवित्र स्वरूप हैं। परमात्मा अपनी मायाशक्ति को धारण करके सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करते हैं। समस्त रूपों में वे ही अभिव्यक्त होने के बावजूद उनके गुण–दोषों से लेशमात्र भी मलिन नहीं होते, किन्तु अप्रभावित रहते हैं, ऐसा पवित्र स्वरूप तत्त्व भगवान विष्णु ही हैं।

उन पवित्रस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ११ –

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा को नमस्कार।

My obeisance to the transcendental God

परमात्मा अर्थात् परं च असौ आत्मा। जो सभी देश, काल और वस्तुओं में विद्यमान है, लेकिन फिर भी सबसे परे है, अर्थात् देशादि की सीमाओं से परे, अछूता है। वे परमात्मा ही सबकी आत्मा है। ऐसे भगवान विष्णु हैं, जो सबकी आत्मा हैं एवं सबसे असंग हैं।

उन परमात्मा को हमारा सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १२ –

ॐ मुक्तानां परमां गतये नमः

मुक्त की परं गतिस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Goal of Liberated.

मुक्तानां परमां उत्कृष्टां गतिः गन्तव्या अर्थात् मुक्त पुरुषों का परं लक्ष्य। जिनको पाने के लिए साधक तथा भक्त विविध साधना का आश्रय लेता हैं। जिसे पाने पर संसार के बन्धन से मुक्ति की प्राप्ति होती है। वह मुक्ति के धाम, परमात्मा स्वयं भगवान विष्णु हैं।

उन परं लक्ष्यस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १३ -

ॐ अव्ययाय नमः

अव्यय स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is Changeless.

न व्येति इति अव्ययः अर्थात् जिसका व्यय अर्थात् नाश नहीं होता है। भगवान विष्णु अव्यय स्वरूप हैं। उनमें कोई भी विकार या परिवर्तन नहीं होता है। वे जगत के आदि में थे, अभी भी हैं, और सदैव रहते हैं। केवल व्यय वाली वस्तुओं में जन्म, मरण, वृद्धि एवं क्षय आदि होता है।

उन अव्यय रूवरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १४ –

ॐ पुरुषाय नमः

शरीर के राजा रूपी पुरुष को नमन।

I Salute the one who is the master of our body.

पुरौ शेते इति पुरुषः। शरीर एक पुर अर्थात् नगर की तरह है। उसमें जो उसके स्वामी/राजा की तरह शयन अर्थात् निवास करता है, उसको पुरुष कहते हैं। उस चेतन स्वरूप राजा के कारण ही पूरा जड़ पदार्थों से बना शरीर रूपी शहर व्यवस्थित एवं जीवन्त रहता है।

सबके शरीर में स्थित उन भगवान विष्णु रूपी परं पुरुष को हमारा सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १५ –

ॐ साक्षिणे नमः

साक्षी स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is a Witness.

साक्षात् अव्यवधानेन स्वरूपबोधेन ईक्षते पश्यति सर्वम् इति साक्षी अर्थात् साक्षात् बिना किसी व्यवधान के अपने स्वरूपभूत ज्ञान से सब कुछ देखता है, इसलिए साक्षी है। जो चेतन स्वरूप सत्ता सबके हृदय में रहकर मन को बगैर प्रयास एवं अपेक्षा के सतत प्रकाशित एवं जीवन्त करती रहती है, और जिनके कारण ही अपने विचार एवं भावों को हम जान पाते हैं, वह चेतन स्वरूप साक्षी, भगवान विष्णु का ही अंश है, उनको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १६ –

ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः

क्षेत्रज्ञ रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Knower of the field.

क्षेत्रं – शरीरं जानाति इति क्षेत्रज्ञः। गीता में इस शरीर को क्षेत्र अर्थात् खेत कहा, जिसमें शुभ–अशुभ कर्मों की खेती होती है। हम लोगों के मन में स्थित वह चेतना जो हमारे शरीर को, मन को, कर्मों को एवं उनके फल आदि को जो जानते हैं, वह ही क्षेत्रज्ञ रूप परमात्मा भगवान विष्णु ही हैं।

उन क्षेत्रज्ञ स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १७ –

ॐ अक्षराय नमः

अक्षर स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is indestructable.

न क्षरति इति अक्षरः अर्थात् जो क्षर अर्थात् क्षीण नहीं होता, वह अक्षर परमात्मा है। परमात्मा देश और काल द्वारा सीमित नहीं होने की वजह से अक्षर हैं। काल के प्रवाह में सब कुछ नष्ट हो जाता है, किन्तु जिनका कभी भी नाश नहीं होता, वह अक्षर स्वरूप परमात्मा भगवान विष्णु ही हैं।

उन अक्षर स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १८ –

ॐ योगाय नमः

योगस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is to be known through Yoga.

ज्ञानेन्द्रियाणि सर्वाणि निरुध्य मनसा सह एकत्वभावना योगः अर्थात् मन सहित ज्ञानेन्द्रियों को रोककर जीव और ईश्वर की एकत्व भावना का नाम योग है। साध्य तक पहुचाने वाले किसी निश्चित साधन को कई बार साध्य के नाम से सम्बोधित करा जाता है। परमात्मा की प्राप्ति योग के द्वारा होने की वजह से परमात्मा का एक नाम योग भी है।

उन योगस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १९ –

ॐ योगविदां नेत्रे नमः

योगवेत्ता के नेता को नमस्कार।

I salute the one who takes care of all Yogis

योगं विदन्ति विचारयन्ति इति योगविदः तेषां नेता ज्ञानिनां योगक्षेमवहनादिना इति योगविदां नेता अर्थात् योग को जानने वाला योगविद् हैं, तथा योगविदां नेता अर्थात् योग को जानने वाले का निर्वाह करने वाले। ज्ञानियों के योग–क्षेम (योग–अप्राप्त की प्राप्ति और क्षेम–प्राप्त की रक्षा करना) का निर्वाह करने के कारण भगवान विष्णु योगविदां नेता कहलाते हैं।

उन योगीओं के निर्वहन कराने वाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २० -

ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय नमः

प्रकृति और पुरुष के स्वामी रूप परमात्मा को नमस्कार

I salute the Lord of Maya and Jiva.

प्रधानं प्रकृतिः माया; पुरुषो जीवः तयोः ईश्वरः प्रधानपुरुषेश्वरः अर्थात् प्रधान अर्थात् माया और पुरुष अर्थात् परमात्मा, उन माया के पति को प्रधानपुरुषेश्वर कहते हैं। माया से ही जगत की सृष्टि होती है, ये प्रभु ही अपने संकल्प से माया को सत्ता–स्फूर्ति प्रदान करके सृष्टि हेतु सक्षम करते हैं।

उन प्रधानपुरुषेश्वर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २१ –

ॐ नारसिंहवपुषे नमः

नरसिंह रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one whose form is
half human and half lion.

नरस्य सिंहस्य च अवयवा यस्मिन् लक्ष्यते तद्वा उपरि यस्य स नारसिंहवपु अर्थात् जिनके शरीर में नर और सिंह इन दोनों के अवयव दिखते हो वे नारसिंहवपु है। नरसिंह रूप में अवतरित होकर भगवान विष्णु ने यह दिखाया था कि वे अधर्म के नाश के लिए एवं धर्म की रक्षा हेतु अकल्पनीय ढंग से प्रकट हो जाते हैं। उन भक्तरक्षक, नरसिंहरूप धारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २२ -

ॐ श्रीमते नमः

श्रीमान् रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is always endowed with wealth.

यस्य वक्षसि नित्यं वसति श्रीः स श्रीमान् श्री अर्थात् लक्ष्मी जिसके वक्षःस्थल में सर्वदा बसती है, वह श्रीमान् है। लक्ष्मी, परमात्मा की समस्त प्रकार की शक्ति और सामर्थ्य की सूचक हैं। लक्ष्मी भगवान विष्णु के वक्षःस्थल पर विराजमान हैं अर्थात् वे लक्ष्मी को धारण किए हुए हैं। जहां भगवान हैं वहीं लक्ष्मीजी हैं। उन सम्पत्ति एवं समृद्धि से सदैव युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २३ -

ॐ केशवाय नमः

केशव स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute Lord Krishna

हतः केशी अतः केशवः अर्थात् केशी नामक असुर का वध करने वाले। विष्णु पुराण में विष्णु अवतार श्री कृष्ण से नारदजी का वचन है – 'हे जनार्दन! आपके हाथ से दुष्टचित्त केशी मारा गया है, इसलिए आप लोक में केशव नाम से प्रसिद्ध होंगे।!' असुरों का संहार करके धर्म की रक्षा करने वाले उन केशव रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २४ –

ॐ पुरुषोत्तमाय नमः

पुरुषोत्तम स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the God who is Purushottam.

पुरुषाणां उत्तमः पुरुषोत्तमः अर्थात् पुरुषों में उत्तम को पुरुषोत्तम कहते हैं। इस लोक में जो कुछ भी नाशवान है, वह क्षर पुरुष है। उसका जो कारण है, वह अक्षर पुरुष है। इन क्षर और अक्षर दोनों की आत्मा की तरह से जो है, वह उन दोनों के दोषों से रहित परमात्मा है। उन्हें पुरुषोत्तम कहा जाता है। भगवान विष्णु स्वयं ही पुरुषोत्तम हैं।

उन पुरुषोत्तम रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २५ –

ॐ सर्वस्मै नमः

सर्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is all.

सर्वरूपत्वात् सर्वः अर्थात् सम्पूर्ण चर–अचर, स्थूल–सूक्ष्म जगत के कारण रूप होने की वजह से वे ही सर्व की तरह से हैं। जिस प्रकार मिट्टी से बने हुए सब बर्तन मिट्टीरूप ही होते हैं। उसी प्रकार सब कुछ उन्हीं परमात्मा से उत्पन्न होने की वजह से सब रूपों में वे ही अभिव्यक्त हैं।

उन सर्वरूप, सर्वात्मा एवं सर्व अधिष्ठान रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २६ -

ॐ शर्वाय नमः

संहारक रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is destroyer.

श्रृणाति संहारसमये संहरति इति शर्वः अर्थात् प्रलय काल में जो सब का संहार करते हैं, उन्हें शर्व कहा जाता है। परमात्मा उत्पत्ति एवं स्थिति तो करते ही हैं, किन्तु जीवन्तता बनाए रखने के लिए वे उचित समय में सबका संहार भी करते हैं। पुराने के नाश के उपरान्त ही नए का सृजन होता है। ये सब एक ही ईश्वर के कार्य हैं। उन ईश्वर रूपा भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २७ -

ॐ शिवाय नमः

परं पवित्रस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Eternally Pure.

निस्त्रैगुण्यतया शुद्धत्वात् शिवः अर्थात् तीनों गुणों से परे होने से शिव है। परमात्मा स्वयं त्रिगुणात्मिका माया के पति होने के कारण अपनी माया के सत्व, रजस् और तमस् नामक तीनों गुणों से एवं उनके दोषों और विकारों से सदैव रहित होते हैं। इस प्रकार वे स्वयं शुद्ध पवित्र स्वरूप रहते हुए, अपनी माया को सत्ता एवं स्फूर्ति प्रदान करते हैं। उन नित्य-शुद्ध, शिव स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २८ –

ॐ स्थाणवे नमः

स्थिर तत्त्व रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is permenent.

स्थिरत्वात् स्थिरः अर्थात् जो स्थिर रूप है। जिसका भी जन्म होता है, वह सदैव अस्थिर रहता है। जन्म, वृद्धि, विकार, परिवर्तन, क्षय और विनाश, इन षड्विकार रूपा परिवर्तन से सबको गुजरना पड़ता है। परमात्मा वो हैं जिनमें ये कोई भी जन्मादि विकार नहीं होते हैं, अतः वे स्थाणु तुल्य हैं। उन स्थाणु रूप कालातीत लेकिन काल के नियन्ता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– २९ –

ॐ भूतादये नमः

भूतों के आदि कारण रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the first cause of all existing things.

भूतानामादि कारणत्वात् भूतादि। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन समस्त पंच महाभूत की उत्पत्ति हुई है, अर्थात् वे किसी न किसी कारण के कार्यरूपा है। उन सब का जो कारण है, वे परमात्मा हैं। उन सब के प्रथम कारण स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३० -

ॐ निधये अव्ययाय नमः

अविनाशी निधि रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Imperishable Treasure.

प्रलयकाले अस्मिन् सर्व निधीयते इति अर्थात् प्रलयकाल में सब प्राणी इन्हीं में स्थित होते हैं, इसलिए वे निधि हैं। जगत तथा समस्त प्राणी की उत्पत्ति हुई है, अतः प्रलय भी निश्चित है। प्रलयकाल में सभी प्राणी इन्हीं परमात्मा में अव्यक्त रूप में स्थित होते हैं। परमात्मा के स्वयं की उत्पत्ति और क्षय नहीं होता है। वे अव्यय स्वरूप रहते हुए सब के रहने का स्थान होते हैं। उन अविनाशी निधि रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३१ -

ॐ सम्भवाय नमः

स्वेच्छा से अवतरित होनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is born out of his free will as an Incarnation

सम्भव अर्थात् स्वेच्छया समीचीनं भवति, अर्थात् जो स्वेच्छा से भली प्रकार उत्पन्न होते हैं। भगवान का यह वचन है कि, 'धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।' प्रत्येक युग में जब अधर्म की वृद्धि होती है और धर्म का ह्रास होता है, तब धर्म की स्थापना हेतु मैं अवतरित होता हूं।' परमात्मा करुणा से प्रेरित होकर अवतार धारण करते हैं। उन अवतारस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३२ –

ॐ भावनाय नमः

सबके कर्मफलदाता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the One who bestows the fruits of their karmas to all Jivas.

सर्वेषां भोक्तृणां फलानि भावयति इति भावनः अर्थात् समस्त भोक्ताओं के फलों को उत्पन्न करते हैं, इसलिए वे भावन हैं। समस्त जीव के द्वारा किए हुए कर्म का फल उन्हें उस समय अथवा कालान्तर में प्राप्त होता है। एक काल को दूसरे काल से जो जोड़ सकते हैं वे कालातीत परमात्मा ही हो सकते हैं। समस्त जीवों के कर्मफलों को देने वाले भगवान विष्णु रूपी परमात्मा ही है। उन व्यवस्थापक कर्मफल प्रदाता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३३ -

ॐ भर्त्रे नमः

समस्त जगत को धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Sustainer of this Universe

प्रपंचस्य अधिष्ठानत्वेन भरणात् भर्ता अर्थात् अधिष्ठान रूप से प्रपंच का भरण करने के कारण भर्ता हैं। समस्त सृष्टि का सृजन परमात्मा ने ही अपनी मायाशक्ति के द्वारा किया है। माया जड़ होने की वजह से उनसे उत्पन्न जगत की भी अपनी स्वतंत्र कोई सत्ता नही है। इस जड़ जगत को सत्ता और स्फूर्ति प्रदान करके परमात्मा ही उसे टिकाए हुए हैं। इस प्रकार समस्त जगत को धारण करने वाले परमात्मा भगवान विष्णु ही है।

उन जगत भर्ता भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३४ -

ॐ प्रभवाय नमः

जगत की उत्पत्ति स्वरूप प्रभु को नमन

I salute the one who is the womb of the world

प्रकर्षेण महाभूतानि अस्मात् जायन्ते इति प्रभवः अर्थात् समस्त महाभूत भली प्रकार उन्हींसे उत्पन्न होते हैं, इसलिए वे प्रभव हैं। समस्त पंचमहाभूत माया से उत्पन्न होते हैं। परन्तु माया स्वयं जड़ होने से न तो उनका स्वतंत्र अस्तित्व होता है, और न ही स्वयं कुछ भी करने में समर्थ है। परमात्मा मायाशक्ति को आत्मवान् करते हैं, जिससे वह जीवन्त हो उठती हैं। उनके माध्यम से यह अद्‌भुत पंचमहाभूत तथा उनसे यह जगत निर्मित होते हैं। इस तरह स्वयं परमात्मा ही समस्त जगत तथा उनके उपादानभूत तत्त्वों की योनिरूप है। उन प्रभव स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ३५ –

ॐ प्रभवे नमः

सर्व समर्थ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is all-powerful

सर्वासु क्रियासु सामर्थ्य अतिशयात् प्रभुः अर्थात् समस्त क्रियाओं में उनकी सामर्थ्य की अधिकता होने से वे प्रभव हैं। सर्वज्ञ परमात्मा परं स्वतंत्र हैं। अतः वे कुछ भी करने, न करने, वा अन्यथा करने में स्वतंत्र तथा समर्थ हैं। वे अपने अधीन मायाशक्ति को धारण करके जगत की उत्पत्ति, स्थिति एवं संहार करने में स्वतंत्र है। सृष्टि की उत्पत्ति आदि उनके लिए प्रयासरहित, संकल्प मात्र से ही सम्भव होती है। उनके सामर्थ्य और स्वतंत्रता की दृष्टि से उन्हें प्रभु कहा गया।

उन प्रभु परमात्मा को हमारा सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३६ -

ॐ ईश्वराय नमः

ऐश्वर्ययुक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is most glorious.

निरुपाधिकं ऐश्वर्यं अस्य इति ईश्वरः अर्थात् जो स्वयं उपाधिरहित है, और महान तथा असीम ऐश्वर्य से युक्त, सब के स्वामी हैं। सब से महान ऐश्वर्य यह है कि उनकी सन्निधि मात्र से प्रकृति जीवन्त हो उठ़ती हैं, और जगत की उत्पत्ति, स्थिति और लय सम्भव करती है। वे ही जगत के स्वामी भी हैं, जो बगैर किसी की सहाय के समस्त कार्य स्वयं करने में समर्थ हैं।

उन ऐश्वर्ययुक्त जगत के प्रभु को नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३७ -

ॐ स्वयम्भूवे नमः

स्वयं होनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who exists by Himself.

स्वयं एव भवति इति स्वयम्भूः। जो स्वयं ही होते हैं। जगत के प्रत्येक पदार्थ का उपादान कारण तथा निमित्त कारण होता ही है। जैसे घड़े का उपादान मिट्टी तथा उसे बनाने वाला कुम्हार उसका निमित्त कारण कहा जाता है। उस प्रकार परमात्मा का कोई भी कारण नहीं है। परमात्मा की कभी उत्पत्ति नहीं हुई है। वे काल से परे सदैव विराजमान हैं।

उन स्वयंभू परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३८ -

ॐ शम्भवे नमः

भक्तों को सुख देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who One who bestows happiness on devotees

शं सुखं भक्तानां भावयति इति अर्थात् भक्तों कि लिए सुख की उत्पत्ति करते हैं, अतः शम्भु हैं। जो भी परमात्मा के प्रति भक्ति से युक्त होता है, उन्हें भक्ति के प्रसादरूप सुख की प्राप्ति अवश्य होती है। ऐसा नहीं है कि वे भक्त के प्रति पक्षपात की भावना रखते हैं, किन्तु जिस प्रकार अग्नि के निकट जाने पर उष्णता की अनुभूति होना अवश्यम्भावि है, उसी प्रकार आनन्द स्वरूप परमात्मा के प्रति भक्ति का प्रसाद सुख भी अवश्य प्राप्त होता है। भक्तों को सुख देनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ३९ -

ॐ आदित्याय नमः

सूर्य रूप हिरण्मय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is golden-hued sun.

आदित्यमण्डलान्तःस्थो हिरण्मयः पुरुषः आदित्यः अर्थात् आदित्यमण्डल में हिरण्मय पुरुष का नाम आदित्य है। आदित्य अर्थात् वह है, जो अत्यन्त तेजस्वी स्वयं प्रकाशपुंज है, तथा जो सब को प्रकाशित करता हैं। इतना ही नहीं, जिसकी वजह से कालचक्र चल रहा है तथा चन्द्रमा प्रकाशित होकर समस्त सृष्टि का पोषण भी करता हैं। वे ही सब जड़ एवं चेतन को उर्जा प्रदान करते हैं। ये सूर्य देवता परमात्मा की ही दिव्य अभिव्यक्ति है। सूर्य देवता को साक्षात ईश्वर ही समझना चाहिए।

उन आदित्य स्वरूप भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४० -

ॐ पुष्कराक्षाय नमः

कमल समान नेत्र वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has eyes resembling the petals of lotus.

पुष्करेण उपमिते अक्षिणी यस्य इति पुष्कराक्षः। जिनके नेत्र को कमल की उपमा दी जाती है, वे कमल नयन अथवा पुष्कराक्ष है। कमल न केवल सुन्दरता का प्रतीक है, किन्तु कीचड़ में रहते हुए भी उससे असंग होता है। इस प्रकार शान्ति और आनन्द का सूचक होता है। भगवान के नेत्र भी संसार के ताप से सन्तप्त को ऐसा ही सुख और सान्त्वना प्रदान करते हैं। अतः भक्तों के द्वारा उन्हें कमलनयन की संज्ञा दी गई।

उन कमलनयन भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४१ -

ॐ महास्वनाय नमः

महान् स्वरवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who possesses thundering voice.

महान् ऊर्जितः स्वनः नादः यस्य स महास्वन अर्थात् जिनके महान स्वर अथवा नाद है। महान नाद ईश्वर का वह स्वर होता है, जिससे सब के अभ्युदय और निःश्रेयस की अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप चारों पुरुषार्थ की सिद्धि होती है। वेद ही परमात्मा की वाणी हैं। यह ज्ञान वेदशास्त्रों में निहित है। इस प्रकार वेद रूपी महान स्वर परमात्मा की ही वाणी होने की वजह से महास्वन कहे जाते हैं। उन वेद स्वरूप दिव्य स्वरवाले परमात्मा भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४२ –

ॐ अनादिनिधनाय नमः

जन्म–मृत्यु से रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has neither birth nor death.

आदिः जन्मः, निधनं विनाशः, यस्य न विद्यते सः अनादिनिधनः अर्थात् जिसका न जन्म होता है, न नाश होता है। परमात्मा का न जन्म होता है, न नाश होता है। परमात्मा समस्त जन्म आदि षड्विकारों से परे हैं, क्योंकि वे काल से परे हैं। उन पर काल का कोई प्रभाव नहीं होता है। अतः उन्हें अनादिनिधन कहा।

उन कालातीत, शाश्वत, जन्म और विनाश से रहित भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४३ -

ॐ धात्रे नमः

विश्व को धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Substratum for the world of names and forms.

विश्वं बिभर्ति इति धाता अर्थात् विश्व को धारण करने वाले। नामरूपात्मक जगत मिथ्या है, इसका अपना स्वतः कोई अस्तित्व नहीं है। जिस प्रकार से रस्सी पर सांप की प्रतीति होती है, उन मिथ्या सर्प को धारण करने वाली रस्सी है। रस्सी रूप अधिष्ठान में ही सांप की प्रतीति होती है। वैसे ही इन मिथ्या नामरूपात्मक जगत के अधिष्ठानभूत वे ही परमात्मा हैं, जिसके उपर इस जगत की कल्पना हुई है। इस प्रकार विश्व को धारण करने वाले परमात्मा ही हैं, उन जगत-धाता प्रभु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४४ –

ॐ विधात्रे नमः

कर्मफलदाता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who generates Karmas and their fruits.

कर्मणां तत्फलानां च कर्ता विधाता अर्थात् जो कर्म और कर्मफलों की सृष्टि करते हैं। जिनके वश में समस्त प्रकृति के तत्त्व अपना दायित्व भली भांति निभा रहे हैं, जिनकी वजह से सृष्टि की सुन्दर व्यवस्था एवं संचालन हो रहा है, जिनके द्वारा बनाए गए नियम और व्यवस्था का कोई भी उल्लंघन नहीं करता। वे ही जीवों के कर्म का हिसाब रखकर उचित समय पर फल प्रदान करते हैं। अतः वे परमात्मा ही विधाता कहे जाते हैं।

उन विधाता स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४५ -

ॐ धातुरुत्तमाय नमः

धारण करनेवालों में श्रेष्ठ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the ultimate support of every thing..

सर्वधातुभ्यः पृथिव्यादिभ्यः उत्कृष्ट धातुः अर्थात् सब को धारण करने वालो में जो श्रेष्ठ है वे धातुरुत्तम हैं। समस्त विश्व को धारण करने वाली यह पृथ्वी है। किन्तु इन पृथ्वी को जो धारण करता है, जिनकी वजह से पृथ्वी का अस्तित्व टिका हुआ है, तथा अन्य सब को धारण करने में सक्षम हुई है, वे निश्चय ही धारण करनेवालों में भी श्रेष्ठ है। वही भगवान विष्णु परमात्मा हैं।

उन धातुओं में श्रेष्ठ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४६ -

ॐ अप्रमेयाय नमः

अप्रमेय स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is not measurable by any of the accepted means of knowledge like senses.

अप्रमेय अर्थात् जो इन्द्रिय, मन आदि किसी भी करण से विषय की भांति नहीं जाना जा सकता है, न ही परिभाषित हो सकता है। जिसे भी परिभाषित वा विषयीकृत किया जाता है, वह सीमित, नाशवान और जड़ होता है। परमात्मा वह चेतन तत्त्व हैं, जिसकी वजह से इन्द्रिय, मन आदि जानने में समर्थ होते है, वाणी किसी वस्तु को परिभाषित करने में सक्षम हो पाती है। इस प्रकार समस्त प्रमाण को जो प्रामाणित करने वाले है, वे स्वयं अप्रमेय हैं।

उन अप्रमेय स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४७ -

ॐ हृषीकेशाय नमः

इन्द्रियों के स्वामी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the master of the senses.

हृषीकाणां ईशः हृषीकेशः अर्थात् जो इन्द्रियों के स्वामी है। विषय को ग्रहण करने वाले तथा उसके प्रति प्रतिक्रिया करने वाली समस्त ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां पंचमहाभूतों से निर्मित होने की वजह से जड़ है। तथापि उनमें विषयों को ग्रहण करने का तथा प्रतिक्रिया करने का सामर्थ्य है, ऐसी जीवन्तता के पीछे चेतन स्वरूप परमात्मा हैं, जिससे सत्ता-स्फूर्ति प्राप्त करती है। इस प्रकार वे इन्द्रियों के स्वामी हैं।

उन इन्द्रियों के स्वामी भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४८ -

ॐ पद्मनाभाय नमः

कमल नाभि वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who in whose navel the lotus, the source of the universe stands.

पद्मं नाभौ यस्य सः पद्मनाभः अर्थात् जिनकी नाभि में पद्म है। वह कमल जिसमें जगत के सृष्टा ब्रह्माजी स्थित है, वह भगवान विष्णु की ही नाभि से उत्पन्न हुआ है। इस प्रकार परमात्मा को जगत् सृष्टा ब्रह्माजी के भी कारण रूप से बताया गया। सृष्टि अत्यन्त सुन्दर है क्योंकि उसका सृष्टा अत्यन्त ज्ञानवान एवं सुन्दर है, इससे हम उनके भी कारणभूत प्रभु की महानता की कल्पना कर सकते हैं।

उन कमल नाभ भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४९ -

ॐ अमरप्रभवे नमः

अमररूप देवताओं के स्वामी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Lord of the Immortals, the Devtas.

अमराणां देवानां प्रभुः इति अमरप्रभुः। इन्द्र, अग्नि, सूर्य, मृत्यु आदि अनेकों देवताओं को जरा और मृत्यु का भय नहीं होता है। अतः वे मनुष्य आदि अन्य समस्त योनियों की अपेक्षा सापेक्ष रूप से अमर माने जाते हैं। वे देवतागण समर्थ शक्तियां है, तथा जगत के संचालन में परमात्मा के आज्ञाकारी सेवक की तरह योगदान देते हैं। ऐसे जगत के संचालक देवताओं के स्वामी भगवान विष्णु ही है।

उन देवताओं के स्वामी भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५० -

ॐ विश्वकर्मिणे नमः

विश्व का निर्माण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the very creator of the world of objects

विश्वं कर्म क्रिया यस्य सः विश्वकर्मा अर्थात् विश्व का निर्माण करना जिसका कर्म है, वे विश्वकर्मा हैं। परमात्मा अपनी अनिर्वचनीय मायाशक्ति को धारण करके इस विश्व का निर्माण करते हैं। इससे वे विश्वकर्मा कहलाते हैं। विश्व का सृष्टा विश्व का ज्ञानी होता है, और साथ-साथ विश्व को बनाने की शक्ति और सामर्थ्य से भी युक्त होता है।

उन सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान विश्व के निर्माता भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५१ –

ॐ मनवे नमः

मनन करनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who has ability to reflect.

मननात् मनुः अर्थात् मनन करने के कारण मनु हैं। मनन मंथन की तरह होता है। जैसे मंथन होने पर ही अमृत की प्राप्ति होती है, वैसे ही मनन से ही ज्ञान रूप अमृत की प्राप्ति होती है। यह मनन करने का विशेष सामर्थ्य ईश्वर की वजह से ही है। उपनिषद् बताता हैं कि न अन्यः अतः अस्ति मन्ता।' इससे पृथक् और कोई मन्ता है ही नहीं। इस सामर्थ्य के कारण ईश्वर मनु कहलाते हैं।

उन मन्तास्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५२ -

ॐ त्वष्ट्रे नमः

संहारकाल में सबको बीजरूप करनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who reverts everything into their seed-form at the time of dissolution.

संहारसमये सर्वभूततनूकारणत्वात् त्वष्टा अर्थात् संहार के समय में जो सब को बीजरूप करते हैं। जब सृष्टि का संहार होता है, तब समस्त स्थूल जगत शनैः शनैः अपने सूक्ष्म तत्त्व अर्थात् कारण में विलीन हो जाता है। जिस प्रकार सुषुप्ति समय में समस्त जगत बीज रूप में लय को प्राप्त होता है। उसी प्रकार संहार के समय बीज रूप में विलीन हो जाता है। उसे बीजरूप में विलीन करनेवाले परमात्मा हैं, अतः उन्हें त्वष्टा कहा जाता हैं।

उन त्वष्टा रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५३ -

ॐ स्थविष्ठाय नमः

सब से स्थूल को नमस्कार।

I salute the one who has manifested as this visible gross world.

अतिशयेन स्थूलः अर्थात् जो अत्यन्त स्थूल है। जिस प्रकार जल का सर्वाधिक स्थूल रूप बर्फ है। उसी प्रकार सूक्ष्म पंचमहाभूतों से निर्मित सृष्टि की स्थूल अभिव्यक्ति यह जगत है। परमात्मा अपनी मायाशक्ति से सूक्ष्म तन्मात्र उत्पन्न करते हैं, तत्पश्चात् उसका स्थूलीकरण होकर स्थूल पंचमहाभूत की तरह अभिव्यक्त होते हैं। उसी से समस्त जगत निर्मित है। एवं सब से स्थूल की तरह परमात्मा ही स्थित है। उन स्थूल एवं ग्राह्यरूप में अभिव्यक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५४ -

ॐ स्थविराय ध्रुवाय नमः

सबसे पुरातन और स्थिर को नमस्कार।

I salute the one who is the Ancient and the Motionless.

पुराणः स्थविरः, स्थिरत्वाद् ध्रुवः अर्थात् जो पुराना है तथा स्थिर है। नया और पुराना शब्द का प्रयोग काल की अपेक्षा होता है, किन्तु परमात्मा से ही काल की उत्पत्ति हुई है, अतः काल का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, एवं वे जैसे थे, वैसे ही सदैव बने रहते हैं, इस प्रकार वे स्थिर भी है।

ऐसे काल से भी पूर्व में स्थित तथा काल की दृष्टि से स्थिर परमात्मा भगवान विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५५ -

ॐ अग्राह्याय नमः

अग्राह्य परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one which cannot be perceived by the sense organs.

इन्द्रियैः न गृह्यते इति अग्राह्यः अर्थात् जो इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण नहीं हो सकता है। इन्द्रियां स्वयं जड़ होने की वजह से विषयों को ग्रहण करने में समर्थ नहीं है। जिन चेतनतत्त्व की वजह से इन्द्रियां समर्थ होती है, वे परमात्मा हैं। उन जड़ इन्द्रियों के द्वारा चेतन परमात्मा कैसे ग्रहण हो सकते हैं! जैसे जिस विद्युत से बल्ब में प्रकाश आता है, वह बल्ब विद्युत को प्रकाशित नहीं कर सकता है। वह चेतनस्वरूप, इन्द्रिय-अग्राह्य भगवान विष्णु हैं। उन अग्राह्य रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५६ –

ॐ शाश्वताय नमः

समस्त काल में स्थित को नमस्कार।

I salute the one which is permanent.

शश्वत् सर्वेषु कालेषु भवति इति शाश्वतः अर्थात् जो भूत, भविष्य एवं वर्तमान इन सब काल में हो, उसे शाश्वत कहते हैं। परमात्मा भूत आदि सभी कालों में बगैर परिवर्तन वा विकार को प्राप्त हुए स्थित रहते हैं। वे काल से सीमित भी नहीं हैं, क्योंकि काल उनसे ही उत्पन्न है। ऐसे शाश्वत स्वरूप परमात्मा भगवान विष्णु हैं।

उन कालातीत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५७ -

ॐ कृष्णाय नमः

आनन्दस्वरूप सत्ता को नमस्कार।

I salute the one who is the existence-Knowledge-Bliss.

आकर्षति इति कृष्णः अर्थात् जो सब को आकर्षित करते हैं, तथा कृष् अर्थात् सता और ण् अर्थात् आनन्द; जो आनन्दस्वरूप सत्ता हैं। सभी जीव सतत उसी आनन्द की ओर आकर्षित होते हैं। वे ही अवतार लेकर श्रीकृष्ण की तरह से स्थित हैं। भगवान कृष्ण का भी व्यक्तित्व समस्त भक्तों को सतत अपनी और आकर्षित करता रहता था। एक नास्तिक व्यक्ति भी आनन्द की तरफ सदैव आकर्षित होता हैं।

सबको सदैव आकर्षित करनेवाले उन आनन्दस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५८ -

ॐ लोहिताक्षाय नमः

लाल नेत्र वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute One whose eyes are tinged red.

लोहिताक्ष अर्थात् जिनके नेत्र लाल है। साधारणतः लाल नेत्र क्रोध का प्रतीक होता है। परमात्मा का अवतार ही अधर्म का नाश तथा धर्म की स्थापना हेतु होता है। जो भी अधर्म का अनुसरण करता हैं, उनके प्रति वे ही आनन्दस्वरूप परमात्मा अपना क्रोध भी व्यक्त करते हैं, तब वे लोहिताक्ष कहे जाते हैं।

अधर्म को नष्ट कर धर्म को संस्थापित करने हेतु क्रुद्ध रूप धारण करने वाले उन परमात्मा को हमारा सादर प्रणाम।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५९ –

ॐ प्रतर्दनाय नमः

प्रलयकाल में संहारकर्ता को नमस्कार।

I salute the one who is the Destroyer of all at the time of cosmic dissolution.

प्रलयकाले भूतानि प्रतर्दयति इति प्रतर्दनः अर्थात् प्रलयकाल में प्राणियों का संहार करते हैं, इसलिए प्रतर्दन कहलाते हैं। यह संहार भी उनकी निष्ठुर करुणा की ही अभिव्यक्ति है, क्योंकि यह संहार प्रलय की ओर ले जाती है। प्रलयकाल में समस्त सृष्टि अव्यक्त रूप बीज में विलीन हो जाती है। तत्पश्चात् नवीन सृष्टि का सृजन होता है। इस प्रकार परमात्मा के द्वारा किया गया संहार भी गरिमामय होता है।

उन संहारक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६० –

ॐ प्रभूताय नमः

समस्त गुणों से सम्पन्न को नमस्कार।

I salute the one who is ever full and perfect in His Essential Nature.

ज्ञानैश्वर्यादि–गुणैः सम्पन्नः प्रभूतः अर्थात् जो ज्ञान, ऐश्वर्य आदि समस्त गुणों से सम्पन्न हैं। परमात्मा स्वयं परिपूर्ण है। तथा सृष्टि में जो कुछ भी ज्ञान, ऐश्वर्य आदि है उन सब की निधिरूप परमात्मा हैं। वे ही सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सर्व ऐश्वर्य से सम्पन्न होने से उन्हें प्रभूत कहा जाता है।

उन ज्ञान और ऐश्वर्य की निधिरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६१ –

ॐ त्रिककुब्धाम्ने नमः

सभी दिशाओं के आश्रय को नमस्कार।

I salute the one who is the
Support of the three quarters.

ऊर्ध्व–अधोमध्यभेदेन तिसृणां ककुभाम् अपि धाम इति त्रिककुब्धाम अर्थात् जो उपर, नीचे और मध्य आदि समस्त दिशाओं के आधारभूत हैं। परमात्मा ही ऊपर, नीचे और मध्य दिशाओं के अर्थात् उन उन दिशाओं में स्थित ऊर्ध्व आदि लोक जो भूः, भुवः, स्वः तीनों लोक के नाम से जाने जाते हैं, उनको आश्रय प्रदान करने वाले हैं, जिसकी वजह से समस्त सृष्टि टिकी हुई है।

उन समस्त लोकों के आश्रयरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६२ -

ॐ पवित्राय नमः

पवित्र करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who gives purity to the heart.

येन पुनाति यो वा पुनाति ऋषिः देवता वा तत् पवित्रम् अर्थात् जिसके द्वारा पवित्र किया जाय अथवा जो पवित्र करे उन देवता का नाम पवित्र है। जो भी साधक अथवा भक्त परमात्मा के ज्ञान की प्राप्ति और भक्ति करता हैं वह समस्त पापादि कर्मो से मुक्त होकर पवित्र हो जाता है। इस प्रकार भगवान विष्णु सब को पवित्र करने वाले देवता हैं, अतः वे स्वयं भी पवित्र हैं।

उन पवित्र करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६३ –

ॐ मंगलाय परस्मै नमः

सर्वाधिक कल्याणकारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is supremely auspicious.

कल्याणरूपाद् मंगलम्, परं सर्वभूतेभ्यः उत्कृष्टं ब्रह्म इति मंगलं परम् अर्थात् जो समस्त कल्याणकारियों में कल्याण का मूल हेतु है। भगवान विष्णु मूल रूप से साक्षात् ब्रह्म हैं। उनके प्रति जो भक्ति रखता है, एवं जो भी उनके परं स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है, वह जन्म–मृत्यु रूप संसार से मुक्त हो जाता हैं, इस प्रकार उनकी भक्ति एवं ज्ञान परं कल्याणकारी है।

उन मंगलस्वरूप, परं कल्याणकारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६४ -

ॐ ईशानाय नमः

सभी भूतों के नियन्ता को नमस्कार।

I salute the one who is the controller of all.

सर्वभूतनियन्तृत्वात् ईशानः अर्थात् सर्व भूतों के नियन्ता होने से भगवान् ईशान हैं। पंचमहाभूतों से बने समस्त जगत के नियन्ता वे परमात्मा ही हैं। उनके संकल्प मात्र से समस्त महाभूत उत्पन्न होते हैं, तथा उन पंचमहाभूतों से बनी हुई सृष्टि उनके ही नियन्त्रण में सुचारु रूप से चलती है। अतः वे ही सृष्टि के संचालक अथवा नियन्ता हैं।

उन सभी भूतों के नियन्तास्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६५ –

ॐ प्राणदाय नमः

प्राणों को देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who gives Pranas to all.

प्राणान् ददाति चेष्टयति इति वा प्राणदः अर्थात् जो प्राणों को देते अथवा चेष्टा कराते हैं, वे प्राणद हैं। सभी जीव प्राणन क्रिया की वजह से ही जीवित कहे जाते हैं। प्राण स्वतः जड़ होते हुए भी चेष्टा वा क्रिया करता है, क्योंकि इसके पीछे चेतन-स्वरूप परमात्मा हैं। इस प्रकार प्राण अर्थात् जीवन देने वाले स्वयं प्राण के प्राण स्वरूप परमात्मा ही हैं। जब तक वे प्राण को अनुगृहीत करते हैं तब तक ही जीवन सम्भव होता है।

उन प्राणदाता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६६ –

ॐ प्राणाय नमः

प्राणस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Prana itself.

प्राणिति इति प्राणः क्षेत्रज्ञः। जो प्राणन क्रिया करे अर्थात् श्वास–प्रश्वास आदि करे, उसका नाम प्राण है। सभी शरीरों में जो प्राणन क्रिया हो रही है, वह प्राण के कारण ही सम्भव होती है। समस्त जीवन का आशीर्वाद इस प्राण के कारण ही सम्भव होता है। जब तक प्राण है, तब तक जीवन है। जो प्राण रूप से अभिव्यक्त हैं वे स्वयं भगवान् विष्णु ही हैं।

उन प्राणस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६७ –

ॐ ज्येष्ठाय नमः

सब से वृद्ध को नमस्कार।

I salute the one who is Older than all.

वृद्धतमो ज्येष्ठः अर्थात् जो सब से वृद्ध है। सृष्टि की उत्पत्ति के पूर्व एक मात्र परमात्मा ही थे, उनसे पहले कुछ भी तथा कोई भी न था। समस्त देश, काल और वस्तु रूपा सृष्टि उनसे ही उत्पन्न हुई है। वे काल से भी परे होने से सब से वृद्ध हैं। वस्तुतः उन पर काल का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता। वे ही हम सबके कुल में सबसे आदि हैं।

उन सब से वृद्ध, जगत के कारणस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६८ -

ॐ श्रेष्ठाय नमः

सब से अधिक प्रशंसनीय को नमस्कार।

I salute the one who is the most Glorious.

प्रशस्यतमः श्रेष्ठः अर्थात् जो सब से अधिक प्रशंसनीय है। सृष्टि में जो कुछ भी प्रशंसनीय है, वह सब परमात्मा की ही अभिव्यक्ति है। उन समस्त प्रशंसनीय अभिव्यक्तियों के भी सारभूत होने की वजह से वे सर्वाधिक प्रशंसनीय हैं। किसी भी वर्ग विशेष में जो सर्वश्रेष्ठ होता है वह ईश्वर की विशिष्ट अभिव्यक्ति उनकी विभूति की तरह से वन्दनीय होती है।

उन सर्वाधिक प्रशंसनीय एवं वन्दनीय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६९ –

ॐ प्रजापतये नमः

समस्त प्रजा के स्वामी को नमस्कार।

I salute the one who is the Lord of all living creatures.

ईश्वरत्वेन सर्वासां प्रजानां पतिः इति प्रजापतिः अर्थात् ईश्वररूप से समस्त प्रजाओं के स्वामी होने की वजह से वे प्रजापति है। ईश्वर ही समस्त जीवों की उनके कर्म और कर्मफल के अनुरूप व्यवस्था एवं सृष्टि करते हैं, तथा सभी जीवों को कर्मफल भी वे ही प्रदान करते हैं। इस तरह समस्त प्रजा के स्वामी हैं।

उन समस्त प्रजा के स्वामी एवं व्यवस्थापक परमात्मा को हमारा सादर नमस्कार।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७० -

ॐ हिरण्यगर्भाय नमः

हिरण्यगर्भ स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who dwells in the womb of the world.

हिरण्मयः अण्डान्तर्वर्तित्वाद् हिरण्यगर्भः अर्थात् ब्रह्माण्डरूप हिरण्मय अण्डा उनके भीतर होने के कारण हिरण्यगर्भ हैं। हिरण अर्थात् तृप्ति व आनन्द का विषय। समस्त ब्रह्माण्ड हिरण्मय है, क्योंकि उससे जीव आंशिक रूप से तृप्ति और आनन्द को प्राप्त करता है। यह समस्त हिरण्मय ब्रह्माण्ड परमात्मा की प्रथम अभिव्यक्ति ब्रह्माजी के संकल्परूप गर्भ में निहित है। अतः वे हिरण्यगर्भ है।

उन हिरण्यगर्भ स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७१ –

ॐ भूगर्भाय नमः

पृथ्वी रूप गर्भ से युक्त को नमस्कार।

I salute the one who is the very womb of the world.

भूगर्भे यस्य सः भूगर्भः अर्थात् पृथ्वी जिनके गर्भ में स्थित है, वे भगवान् भूगर्भ है। यह जगत सृष्टि काल में परमात्मा से ही अव्यक्त से व्यक्त होता है। जगत की उत्पत्ति के पूर्व वह परमात्मा में ही निहित होता है, अतः भगवान् विष्णु परमात्मा ही भूगर्भ हैं।

उन भूगर्भ रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७२ -

ॐ माधवाय नमः

मायापति परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Lord of Maya.

माया: श्रियः धवः पतिः माधवः अर्थात् मा लक्ष्मी के पति होने से भगवान् माधव हैं। लक्ष्मी अर्थात् सम्पत्ति। समस्त सम्पत्तियां भगवान् के अधीन हैं, तथा उनकी ही सेवा में समर्पित है। भगवान उनके अधीन नहीं हैं किन्तु उनका स्वामित्व उनके उपर होने से वे माधव कहलाते हैं।

उन लक्ष्मी के पति एवं सब के सारभूत तत्त्व परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ७३ -

ॐ मधुसूदनाय नमः

मधु नामक दैत्य के हन्ता को नमस्कार।

I salute the one who destroyed the great demon Madhu.

मधु नामानं असुरं सूदितवान् इति मधुसूदनः। पुराण में प्रसिद्ध प्रसंग है कि भगवान् विष्णु ने भयानक एवं उस समय के बहुत बड़े असुर अर्थात् आतंकवादी मधु और कैटभ नामक दैत्य को मारा था। इसलिए भगवान विष्णु का एक नाम मधुसूदन है।

उन मधुसूदन भगवान् विष्णु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७४ –

ॐ ईश्वराय नमः

सर्वशक्तिमान् परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Omnipotent

सर्वशक्तिमत्तया ईश्वरः अर्थात् सर्वशक्तिमान् होने से ईश्वर हैं। मूल रूप से तीन प्रकार की शक्तियां होती हैं, जिसकी वजह से सृष्टि की उत्पत्ति आदि सम्भव होती है। वह है ज्ञानशक्ति, इच्छाशक्ति और क्रियाशक्ति। परमात्मा में समस्त जगत की उत्पत्ति का हेतुभूत ज्ञान, उसको उत्पन्न करने की शक्ति तथा उसके क्रियान्वयन करके उत्पन्न करना यह तीनों शक्तियां विद्यमान है। अतः वे सर्वशक्तिमान् है।

उन सर्वशक्तिमान् परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७५ –

ॐ विक्रमिणे नमः

शौर्यवान् को नमस्कार।

I salute the one who is courageous.

विक्रमः शौर्यम्, तद्योगात् विक्रमी अर्थात् विक्रम शूरवीरता को कहते हैं, तथा उससे युक्त होने के कारण विक्रमी हैं। परमात्मा अवतार को धारण करके अनेकों बलशाली असुरों का विनाश करते हैं, इतना ही नहीं, समस्त सृष्टि के भी संहार के हेतुभूत बल और साहस से युक्त होते हैं। अतः वे अत्यन्त शौर्यवान् हैं।

उन शौर्यवान् परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७६ –

ॐ धन्विने नमः

धनुर्धारी को नमस्कार।

I salute the one who is armed with bow.

धनुः अस्य अस्ति इति धन्वी अर्थात् जिनके पास धनुष है, वे धन्वी हैं। भगवान गीता में बताते हैं कि 'रामः शस्त्रभृतामहम्।' 'शस्त्रधारियों में मैं श्रीराम हूं।' भगवान् ने जब अधर्म को नष्ट कर धर्म की स्थापना हेतु श्रीराम के रूप में द्वापर में अवतार लिया था, तब सारंग नामक प्रसिद्ध धनुष को धारण किया था। उसके माध्यम से रावणादि असुरों का वध करके धर्म को पुनः स्थापित किया था। इस प्रकार भगवान विष्णु ही सर्व श्रेष्ठ धनुर्धर हैं।

उन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७७ –

ॐ मेधाविने नमः

मेधाशक्ति से युक्त को नमस्कार।

I salute the one who is supremely intelligent

मेधा बहुग्रन्थार्थधारणसामर्थ्यम् सा यस्य अस्ति इति मेधावी अर्थात् जिनमें समस्त ग्रंथों के अर्थ को समझने एवं धारण करने का सामर्थ्य रूप मेधा है, वे मेधावी हैं। परमात्मा वो हैं जिनसे समस्त ज्ञान की निधिरूप वेदशास्त्र प्रकट हुए हैं, अतः वे स्वयं उनके समस्त अर्थ को जानने वाले होते हैं।

उन दिव्य मेधाशक्ति से युक्त भगवान विष्णु को सादर प्रणाम।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७८ –

ॐ विक्रमाय नमः

अत्यन्त पराक्रमी को नमस्कार।

I salute the one who has profound prowess

विक्रम अर्थात् पराक्रमी। जिसके मन में परास्त होने की कोई सम्भावना भी नहीं आती है। जो अपने समक्ष आए विघ्नों को आसानी से निर्मूल कर देते हैं, उन पराक्रमी को नमन।

दूसरा अर्थः वि अर्थात् गरुड़ और क्रम अर्थात् गमन। भगवान विष्णु का वाहन गरुड़ हैं। वे गरुड़ पर आसीन होकर समस्त सृष्टि में गमन करते हैं, इसलिए भी वे विक्रम कहे जाते हैं। उन गरुड़ पर गमन करनेवाले भगवान विष्णु को सादर प्रणाम।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७९ –

ॐ क्रमाय नमः

जो संसार से परे है उनको नमन।

I salute the one who transcends samsara.

क्रमणात् क्रमः अर्थात् अतिक्रमण करने के कारण वे क्रम हैं। परमात्मा पूर्ण होने के कारण संसार से परे हैं अर्थात् संसार के धर्म से अछूते हैं। उनका संसार के धर्मों से अछूता होना ही अतिक्रमण करना है। यह ही उनकी क्रम स्वरूपता का परिचायक हैं।

उन संसार से परे पूर्ण स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८० -

ॐ अनुत्तमाय नमः

सब से उत्तम को नमस्कार।

I salute the one who is the greatest.

अविद्यमान उत्तमो यस्मात् सः अनुत्तमः अर्थात् जिससे उत्तम कोई और न हो वे अनुत्तम हैं। परमात्मा से उत्तम कुछ भी नहीं हैं। यदि भगवान् के उपहित रूप को भी देखें तो वे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् हैं, उनसे बढ़कर कोई वा कुछ भी नहीं हैं तथा वे उन सब से अछूते भी हैं अतः भगवान विष्णु अनुत्तम हैं।

उन सर्वोत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ परमात्मा को हमारा सादर प्रणाम।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८१ –

ॐ दुराघर्षाय नमः

अजेय को नमस्कार।

I salute the one who is unconquerable.

दैत्यादिभिः घर्षयितुं न शक्यते इति दुराघर्षः अर्थात् जो दैत्य आदि के द्वारा दबाये नहीं जा सकते, वे भगवान् दुराघर्ष हैं। जब जब अधर्म की वृद्धि होती है, एवं अन्य देवता उसके सामने असमर्थ हो जाते हैं, तब भगवान् अवतार धारण कर स्वयं उनका वध करते हैं। भगवान् के सामने वे सब स्वयं को असमर्थ व शक्तिहीन अनुभव करते हैं। ऐसे धर्मरक्षक भगवान विष्णु ही दुराघर्ष हैं।

उन दुराघर्ष रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८२ -

ॐ कृतज्ञाय नमः

कृत्य को जाननेवाले को नमस्कार।

I salute the one who knows all that is done by all.

प्राणिनां पुण्यापुण्यात्मकं कर्म कृतं जानाति इति कृतज्ञः अर्थात् प्राणियों के पाप-पुण्यरूप कर्मों को जो जानते हैं, वे कृतज्ञ हैं। प्रत्येक जीव अपने संस्कार और वासना के अनुरूप कर्म करता है। कर्म के दो प्रकार के फल प्राप्त होते है; पुण्य एवं पाप। ईश्वर ही जीव को उसके पाप वा पुण्य कर्म अनुसार कालान्तर वा जन्मान्तर में उचित फल प्रदान करते हैं।

उन समस्त पुण्यापुण्य रूपी कृत्यों को जाननेवाले कर्मफलदाता रूप कृतज्ञ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८३ –

ॐ कृतये नमः

कर्म के आधारभूत को नमस्कार।

I salute the one who is the very dynamism behind all activities.

पुरुषप्रयत्नः कृतिः क्रिया वा अर्थात् पुरुष–प्रयत्न रूपी क्रिया का नाम कृति है। मनुष्य का प्रयत्न जिन करण के द्वारा होता है, वह करण जड़ है, किन्तु उनकी भी आत्मा की तरह से, उनके आधार की तरह से रहकर परमात्मा उन–उन करणों को आत्मवान करते हैं, जिससे क्रिया सम्भव होती है। इस प्रकार भगवान इन सभी क्रियाओं के आधार होने के कारण वे कृति शब्द से लक्षित होते हैं, इसलिए वे भगवान विष्णु ही कृति है।

उन कृतिस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८४ -

ॐ आत्मवते नमः

अपनी महिमा में स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is established in his own greatness.

स्वेमहिम्नेप्रतिष्ठितत्वात् आत्मवान्। अपनी ही महिमा में स्थित होने के कारण वे आत्मवान् हैं। समस्त ब्रह्माण्ड, चौदह भुवन, चौदह लोक आदि सब कुछ उन परमात्मा में स्थित है। परमात्मा के ही अनुग्रह से इन सब का अस्तित्व टिका हुआ हैं। किन्तु परमात्मा किस पर आश्रित है, इसका उत्तर यहां प्राप्त होता है। परमात्मा वह है जिन्हें किसी पर आश्रित होने की आवश्यकता नहीं है, वे अपनी ही महिमा में स्थित है।

उन अपनी महिमा में स्थित सब के आधारभूत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८५ –

ॐ सुरेशाय नमः

देवताओं के स्वामी को नमस्कार।

I salute the one who is Lord of Deities.

सुराणां देवानाम् ईशः सुरेशः, सुर अर्थात् देवताओं के स्वामी होने से सुरेश हैं। सुर अर्थात् जो शुभ देनेवाले है, उनके ईश्वर होने से भगवान् सुरेश हैं। देवता लोग भगवान् के आज्ञाकारी सेवक हैं, वे प्रभु की आज्ञा व नियम में रहते हुए जीवों की इच्छा आदि की पूर्ति करते हैं। वे भगवान् से ही शक्ति एवं सामर्थ्य को प्राप्त है। इस प्रकार देवताओं के स्वामी स्वयं भगवान् विष्णु हैं।

उन देवताओं के स्वामी, परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८६ -

ॐ शरणाय नमः

दीनों का दुःख दूर करनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who removes the sorrows of those in distress.

आर्तानाम् आर्तिहरणत्वात् शरणम् अर्थात् दीनों का दुःख दूर करने के कारण वे शरण हैं। आर्त अथवा दीन वह है जो स्वयं की असमर्थता को विनम्रता से स्वीकार करके प्रभु के प्रति श्रद्धापूर्वक आश्रित होता है। सर्व समर्थ भगवान् के प्रति आश्रित होने मात्र से ही बोझों से मुक्त होकर हल्कापन लगने लगता है। अतः वे भगवान विष्णु ही एक मात्र शरण हैं।

उन शरण स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८७ -

ॐ शर्मणे नमः

परमानन्दस्वरूप को नमस्कार।

I salute the one whose nature is of supreme bliss.

परमानन्दरूपत्वात् शर्मः अर्थात् परमानन्दस्वरूप होने से शर्म हैं। भगवान् स्वयं आनन्दस्वरूप है। जीव को जो विषय आदि से आनन्द की प्राप्ति होती प्रतीत होती है, उसका वास्तविक स्रोत परमात्मा ही हैं। उन्हें आनन्द हेतु किसी अन्य विषय भोग आदि पर आश्रित नहीं होना पड़ता हैं। वे भगवान विष्णु स्वयं परमानन्दस्वरूप हैं।

उन परमानन्द स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८८ –

ॐ विश्वरेतसे नमः

विश्व के कारणभूत को नमस्कार।

I salute the one who is the seed of the universe.

विश्वस्य कारणत्वात् विश्वरेता: अर्थात् विश्व के कारण होने से भगवान् विश्वरेता हैं। रेता अर्थात् बीज। जिस प्रकार समस्त वृक्ष की उत्पत्ति बीज से होती है, उसी प्रकार यह विविधता पूर्ण जगत् उन्हीं परमात्मा से उत्पन्न हुआ है। इस प्रकार वे विश्वरेता हैं।

उन विश्व के कारणरूप विश्वरेता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८९ –

ॐ प्रजाभवाय नमः

जिनसे समस्त प्रजा उत्पन्न हुई है, उनको नमस्कार।

I salute the one from whom all beings have originated.

सर्वाः प्रजा यत्सकाशाद् उद्भवन्ति स प्रजाभवः अर्थात् जिनसे सम्पूर्ण प्रजा उत्पन्न हुई है, वे प्रजाभव कहलाते हैं। परमात्मा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के विश्वरेता अर्थात् बीजरूप है। उन्हींसे सब कुछ उत्पन्न हुआ है। यह समस्त उनकी प्रजा रूप प्राणी जगत भी उन्हीं से उत्पन्न हुआ है, अतः वे भगवान विष्णु प्रजाभव हैं।

उन प्रजाभव स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९० –

ॐ अह्ने नमः

प्रकाशस्वरूप को नमस्कार।

I salute the one who is Luminous.

प्रकाशरूपत्वाद् अहः अर्थात् प्रकाशस्वरूप होने के कारण वे अहः कहलाते हैं। जिसे प्रकाशित करने के लिए अन्य प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती है, उसे प्रकाशरूप कहा जाता है। जैसे सूर्य, चन्द्र, अग्नि आदि। उन सूर्यादि को प्रकाशित करने हेतु किसी अन्य लौकिक प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती है, परन्तु उनमें भी जो अन्य को प्रकाशित करने का सामर्थ्य प्राप्त है, वह उन परमात्मा की वजह से ही है।

उन प्रकाशस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९१ –

ॐ संवत्सराय नमः

काल रूप से स्थित परमात्मा को नमन।

I salute the one who is Lord of Time.

कालात्मना स्थितो विष्णुः संवत्सरः अर्थात् कालस्वरूप से स्थित हुए भगवान् विष्णु ही संवत्सर कहे जाते हैं। भगवान् स्वयं काल से परे हैं, किन्तु वे ही काल रूप से भी अभिव्यक्त हुए हैं। अतः भगवान विष्णु ही संवत्सर हैं।

उन काल रूप से स्थित संवत्सर रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९२ -

ॐ व्यालाय नमः

सर्प की तरह से स्थित प्रभु को नमन।

I salute the one who is like Serpent.

व्यालवद् ग्रहीतुमशक्यत्वाद् व्यालः अर्थात् जिसे सर्प के समान ग्रहण नहीं किया जा सकता हैं वे भगवान विष्णु व्याल अर्थात अग्राह्य हैं। अग्राह्य उसे बोलते हैं जिसे उपलब्ध इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण नही किया जा सकता है, क्योंकि वे अतिसूक्ष्म हैं, एवं इन्द्रियादि की आत्मा भी हैं अतः वे भगवान् विष्णु ही व्यालरूप अर्थात अग्राह्य हैं।

उन व्यालस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९३ -

ॐ प्रत्ययाय नमः

प्रतीति स्वरूप को नमस्कार।

I salute the one whose very nature is Knowledge.

प्रतीति प्रज्ञा प्रत्ययः; प्रतीति अर्थात् प्रज्ञा रूप होने से वे प्रत्यय हैं। परमात्मा स्वयं ज्ञानस्वरूप हैं, तथा उनके ही प्रकाश से सब कुछ ज्ञान का विषय बनता हैं। वे ही अन्तःकरण में विविध प्रत्यय रूप से प्रतीत हो रहे हैं। प्रत्येक प्रत्यय ज्ञानस्वरूप चेतना से प्रकाशित होता है, और स्वतः भी ज्ञान रूपी उपादान का कार्य होता है। वे ज्ञानस्वरूप भगवान विष्णु ही समस्त प्रत्ययों की तरह स्थित होते हैं।

उन ज्ञानस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९४ –

ॐ सर्वदर्शनाय नमः

सबकुछ देखनेवाले को नमस्कार।

I salute the one with eyes everywhere.

सर्वाणि दर्शनात्मकानि अक्षीणि यस्य स सर्वदर्शनः सर्वात्मकत्वात् अर्थात् सर्वरूप होने के कारण सभी जिनके दर्शन अर्थात् नेत्र हैं वे भगवान् सर्वदर्शन हैं। सभी प्राणियों के चक्षु के पीछे वे ही चेतनता प्रदान करते हैं, जिसकी वजह से सब देख पाते हैं। बिना चेतना के कोई भी दर्शन सम्भव नहीं होता है। इस प्रकार वे ही सभी नेत्र आदि इन्द्रियों के पीछे स्थित रहकर विविध विषयों को देखनेवाले हैं।

उन सब कुछ देखने वाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९५ –

ॐ अजाय नमः

जन्म से रहित को नमस्कार।

I salute the one who is unborn.

न जायते इति अजः अर्थात् जिसका जन्म नहीं होता हैं, वह अजन्मा हैं। किसी का भी जन्म किसी काल विशेष में होता हैं। परमात्मा काल से भी परे हैं, काल परमात्मा से ही उत्पन्न हुआ है, अतः वे अजन्मा कहलाते हैं। अजन्मा होने के कारण वृद्धि, क्षय आदि सभी विकारों से भी रहित हैं।

उन अजन्मा स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ९६ -

ॐ सर्वेश्वराय नमः

सबके ईश्वर को नमस्कार।

I salute the one who is Supreme Controller.

सर्वेषाम् ईश्वराणाम् ईश्वरः इति सर्वेश्वरः अर्थात् सभी ईश्वरों के भी ईश्वर होने से वे सर्वेश्वर हैं। इस जगत में यम आदि शक्तिशाली अन्य सब को नियन्त्रित करने वाले देवता हैं, उन सब के परमात्मा ही नियन्ता हैं। समस्त शक्तियां उन्हींके अधीन रहकर अन्य को नियन्त्रित करती हैं। इसी कारण जगत की सुन्दर व्यवस्था सुचारु रूप से संचालित होती हैं। इस प्रकार वे भगवान विष्णु सर्वेश्वर हैं।

उन सर्वेश्वर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९७ –

ॐ सिद्धाय नमः

सिद्ध स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is an embodiment of all achievements.

नित्य निष्पन्नरूपत्वात् सिद्धः अर्थात् नित्य सिद्धस्वरूप होने से वे सिद्ध कहलाते हैं। परमात्मा पूर्ण स्वरूप हैं। समस्त सिद्धियां अन्ततः हमें परमात्मा की ही प्राप्ति कराती हैं, तभी कोई साधक सिद्ध कहलाता है। जैसे समस्त नदियां सागर की तरफ ही जाती हैं, लेकिन सागर को कहीं नहीं जाना होता है।

उन सिद्ध एवं पूर्ण स्वरूप परमात्मा को सादर नमस्कार।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९८ –

ॐ सिद्धये नमः

सभी फलों में श्रेष्ठतम को नमस्कार।

I salute the one who is most superior.

निरतिशयरूपत्वात् फलरूपत्वाद् वा सिद्धिः अर्थात् जो सब से श्रेष्ठ तथा सब के फलरूप होने के कारण सिद्धि हैं। लौकिक दृष्टि से जिसे सब से उत्तम फल माना जाता है, वह स्वर्ग आदि पुण्यलोक भी नाशवान् होते हैं, अतः वे वास्तव में सिद्धि नहीं हैं। जिसे पाने पर अन्य किसी सिद्धि की अपेक्षा नहीं रहती है, वे ही परमात्मा भगवान विष्णु सिद्धि रूप हैं।

उन सबसे उत्तम उपलब्धि स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९९ –

ॐ सर्वादये नमः

सब के आदि अथवा कारण को नमस्कार।

I salute the one is the first cause of all elements.

सर्वभूतानाम् आदिकारणत्वात् सर्वादिः अर्थात् सब भूतों के आदिकारण होने से सर्वादि हैं। समस्त जगत की उत्पत्ति तथा उनके उत्पत्तिकर्ता ब्रह्माजी के आदि अर्थात् पूर्व में जो शाश्वत तत्त्वस्वरूप से स्थित हैं, उनसे पूर्व किसी का भी अस्तित्व नहीं था। अतः वे भगवान विष्णु ही सर्वादि रूप हैं।

उन सब के आदि, तत्त्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १०० –

ॐ अच्युताय नमः

स्वरूप से च्युत नहीं होनेवाले को नमन।

I salute the one never transgresses his nature

स्वरूप–सामर्थ्यात् न च्युतो, न च्यवते, न च्यविष्यते इति अच्युतः अर्थात् अपने स्वरूप और सामर्थ्य से कभी भी च्युत नहीं हुए, न होते हैं और न होंगें इसलिए अच्युत कहलाते हैं। परमात्मा सदैव पूर्ण, एवं अखण्ड स्वरूप हैं। विकारी, खण्डयुक्त जीव, जगत आदि अभिव्यक्तियां, उन्हीं पर आश्रित होती हैं। जिस समय सब व्यक्त होता है, उस समय भी परमात्मा पर लेश–मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता है और नहीं कोई सम्भावना होती है। वे भगवान् विष्णु ही अच्युत हैं।

उन अच्युत स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।